CHAPTER 21

HINDI

Doctoral Theses

152. अनिल कुमार

'राष्ट्रवाद' की अवधारणा और स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता (सन् 60 के बाद)

निर्देशक : श्री प्रताप सहगल

Th 15795

सारांश

शोध-प्रबंध 'राष्ट्रवाद की अवधारणा' एवं 'स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी-कविता' को केन्द्र में रख कर लिखा गया है । एक ऐसे समय में जब राष्ट्रों की सीमाएँ ढीली हो रही हों तथा 'विश्व-ग्राम (Global Village) की अवधारणा को विश्व-शक्तियाँ प्रस्ताविक कर रही हों, तब इसका पड़ताल अनिवार्य हो जाता है । 'भूमंडलीकरण' के दौर में सभी राष्ट्र शामिल होने के लिए दौड़ लगा रहे है । विकास की आधुनिकतावादी अवधारणा अब नाकाफी हो चुकी लगती है । राष्ट्रीयता एक गतिशील संघटना है । राष्ट्रीयता उस विशेष सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक संदर्भ से अपनी विशिष्टताओं का निर्माण करती है जिसमें उसका विकास होता है। सामंतवादी खंडहर पर पूँजीवाद के उदय तथा बुर्जुआ वर्ग के उत्थान से राष्ट्रीयता का संबंध माना जाता है ।

विषय सूची

1. राष्ट्रवाद : अवधारणात्मक विश्लेषण । 2. भारतीय राष्ट्रवाद : उदय एवं विकास। 3. आधुनिक हिन्दी कविता में राष्ट्रवाद (1947 तक) । 4. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता और राष्ट्रवाद का विमर्श । 5. अकेन्द्रीय राष्ट्रवाद । उपसंहार एवं संदर्भ-ग्रंथ-सूची ।

153. अनु कुमारी

स्वातंत्र्योत्तर मध्यवर्गीय दाम्पत्य संबंधों में तनाव और हिंदी उपन्यास-1970 तक ।

निर्देशक : डॉ. द्वारिका प्रसाद 'चारूमित्र'

Th 15691

सारांश

भारतीय समाज में 'दाम्पत्य' एक महत्त्वपूर्ण और ताकतवर संस्था के रूप में स्थान पाता रहा है । इस संस्था को कहीं समझौता तो कहीं मजबूरी के रूप में देखा जाने लगा है जिसे हिंदी उपन्यासों में विशदता के साथ चित्रित किया गया है । शोध प्रबंध में उपरोक्त विषय को दिखाने का प्रयास किया गया है। जहाँ से भारतीय समाज में, विशेषकर मध्यवर्ग में इस समस्या का प्रभाव होना देखा जा सकता है।

विषय सूची

1. भारतीय वर्ग व्यवस्था और मध्यवर्ग । 2. स्वतंत्र भारत का परिदृश्य । 3. दांपत्य संबंध और तनाव । 4. स्वातंत्र्य पूर्व उपन्यास और मध्यवर्गीय दांपत्य । 5. बदलते सामाजिक संदर्भ और दांपत्य जीवन । 6. अर्थतंत्र से संक्रमित दांपत्य। 7. दांपत्य संबंध से जुड़ी मनोवैज्ञानिक समस्याएँ । उपसंहार एवं परिशिष्ट ।

154. उपाध्याय (सुधा)

साठोत्तर हिंदी उपन्यासों में राजनीतिक चरित्र ।

निर्देशक : डॉ. अपूर्वानंद

Th 15797

सारांश

शोध प्रबंध साठ के बाद की राजनीति और राजनीतिक चरित्रों को जानने और पहचानने की ओर एक पहल है । राजनीति जैसा भारतेंदु हिरशचन्द्र मानते थे वह तात्विक विचार है जो निज धर्म कर्तव्य को निभाते हुए समाज और समय से शिष्ट आचरण करे । वस्तुतः राजनीति देश को सुगठित और व्यवस्थित कर उसे प्रगति

पथ पर अग्रसर करने की एक दृष्टि है, एक प्रयत्न है । यह समुचित मार्ग खोजने की एक अनवरत प्रक्रिया है । साठोत्तरी हिंदी उपन्यास मानवीय अस्तित्व की समस्याओं सामाजिक जीवन की बिडम्बनात्मक विसंगतियों, संबंधों के खोखलेपन और अजनबीपन के व्यापक दंश को अभिव्यिक्ति देने के लिए रचनात्मक स्तर पर सामान्य व्यक्तियों (चरित्र) की प्रतिष्ठा की गई ।

विषय सूची

1. राजनीति समुझै सकल पावहि तत्व विचार पहिचानहिं निज धरम को जानहि शिष्टाचार । 2. साठोत्तर राजनीति का स्वरूप और उपन्यास । 3. दलवादी वर्चस्व की राजनीति और औपन्यासिक चरित्र । 4. जाति, क्षेत्र, सम्प्रदाय और हिंदी उपन्यासों का चरित्र । उपसंहार एवं परिशिष्ट । संदर्भ-ग्रन्थ-सूची ।

155. जैन (विवेक कुमार)

'उपभोक्ता-संस्कृति और समकालीन हिन्दी साहित्य में प्रस्थापना परिर्वतन के चिह्नों का अध्ययन' (बीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक और उसके बाद के संदर्भ में)

निर्देशक : प्रो. सुधीश पचौरी

Th 15695

सारांश

शोध प्रबन्ध में 'उपभोक्ता संस्कृति' से संबंधित विभिन्न अवधारणाओं एवं उनकी निर्मित की प्रक्रिया तथा इससे संबंधित विचार पद्धतियों के विश्लेषण के माध्यम से इसका स्वरूप स्पष्ट किया गया है । अर्थव्यवस्था संस्कृति को आगे कर बढ़ रही है । '1990 के दशक में भारतीय अर्थव्यवस्था में उदारीकरण की प्रक्रिया का आरंभ होने का विवेचन विश्लेषण किया गया है । उपभोग व उपभोक्ता की दृष्टि से भारतीय संस्कृति का 'हडप्पा सभ्यता' से लेकर वर्तमान सभ्यता तक का समग्रता में विश्लेषण किया गया है।

विषय सूची

1. उपभोक्ता-संस्कृति की अवधारणा । 2. पूँजीवाद का नया चरण । 3. 1990 के दशक में भारतीय अर्थव्यवस्था में उदारता की नीति । 4. उपभोक्तावाद का तर्क। 5. परिवर्तित होती साहित्य की प्रस्थापनाएँ । 6. भविष्य के साहित्य की प्रतिस्थापनाओं की पहचान । उपसंहार एवं परिशिष्ट ।

156. त्यागी (जसवीर)

छायावादी कवियों के पत्रों में युगबोध ।

निर्देशक : डॉ. कृष्णदत्त शर्मा

Th 15687

सारांश

हिंदी साहित्य में छायावाद भक्तिकाव्य के बाद का सबसे महत्त्वपूर्ण काव्यांदोलन है। छायावादी कवियों ने कविता, उपन्यास, नाटक, निबंध के साथ-साथ पत्र भी खूब लिखे हैं । ये पत्र छायावाद युगीन परिदृश्य पर प्रकाश डालते हैं । छायावादी कवि ऐसे विशिष्ट साहित्यकार हैं, जिनके पत्र भी साहित्य हैं । एक साहित्यिक कृति के समान की प्रेरणाप्रद और जीवंत । शोध प्रबंध में 'छायावादी कवियों के पत्रों में युगबोध' का विवरण दिया है ।

विषय सूची

1. साहित्य और युगबोध । 2. पत्र का सैद्धांतिक विवेचन । 3. पत्र-साहित्य की परंपरा और विकास । 4. छायावादी कवियों के पत्रों में युगबोध । 5. छायावादी कवियों के पत्रों में शिल्प और शैली । उपसंहार एवं परिशिष्ट ।

157. दर्शना कुमारी

कृष्णा सोबती और मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों के प्रमुख नारी पात्रों का तुलनात्मक अध्ययन ।

निर्देशक : डॉ. राजेन्द्र गौतम

Th 15736

96

सारांश

उपन्यास का आरम्भ, द्वितीय चरण, प्रेमचंद युग, जैनेन्द्र युग । इसी क्रम में यहाँ स्वातन्त्र्योत्तर उपन्यासों का प्रवृत्तिगत विश्लेषण किया गया है । इसका मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, ऐतिहासिक, आंचलिक, नवलेखन तथा समसामयिक उपन्यासों के विकासक्रम के अन्तर्गत संक्षिप्त परिचय दिया गया है । अन्त में इस अध्याय को महिला उपन्यासकारों के विशेष संदर्भ में हिन्दी उपन्यास के विकासक्रम के रूप में प्रस्तुत किया गया है । सर्वप्रथम कृष्णा सोबती के उपन्यास साहित्य का कालक्रमानुसार विवरण प्रस्तुत किया गया है । मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों का कालक्रमानुसार परिचयात्मक अध्ययन तथा समग्र आंकलन प्रस्तुत किया गया है । नारी पात्रों का परिवशगत वैशिष्ट्य, नारी पात्रों की अस्मिता की तलाश तथा विद्रोह का स्वरूप । इन तीनों बिन्दुओं के आधार पर समग्र आंकलन भी प्रस्तुत किया गया है ।

विषय सूची

1. हिन्दी उपन्यास की विकासक्रम । 2. उपन्यास के प्रतिपाद्य में पात्र-योजना का महत्त्व । 3.कृष्णा सोबती के उपन्यासों का परिचात्मक अध्ययन और उनके स्त्री पात्रों का वैशिष्ट्य । 4. मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों का परिचात्मक अध्ययन और उनके स्त्री पात्रों का वैशिष्ट्य । 5. कृष्णा सोबती और मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों के प्रमुख नारी पात्रों का तुलनात्मक अध्ययन । उपसंहार एवं परिशिष्ट ।

158. प्रसाद (नन्द किशोर)
रैदास और रज्जब की सामाजिक दृष्टि ।
निर्देशक : प्रो. गोपेश्वर सिंह
Th 15739

सारांश

रैदास और रज्जब के अध्ययन के क्रम में संतों द्वारा वर्णित धर्म, जाति, ईश्वर, चेतना, दाम्पत्य संबंध व संत भाषा की दशा और दिशा को स्पष्ट करने की कोशिश की है । मध्यकाल में गुरू और संस्था को स्पष्ट करते हुए समाज के भीतर उसकी

दशा सापेक्ष भागीदारी पर विचार किया है । विविध सामाजिक बिन्दुओं पर रैदास और रज्जब के कहने-सुनने के ढंग का विश्लेषण किया गया है । आधुनिक संदर्भ में, रैदास और रज्जब की प्रासंगिकता इसलिए है क्योंकि उनमें धर्म एवं जाति की समझ है ।

विषय सूची

1. समाज की अवधारणा और समाज की विकास प्रक्रिया । 2. रैदास और रज्जब के साहित्य में सामाजिक अध्ययन के आधार । 3. रैदास और रज्जब की वाणी में सामाजिक अध्ययन की दिशाएँ । 4. विभिन्न सामाजिक बिन्दुओं पर रैदास और रज्जब के संदेश । 5. काव्य भाषा और काव्य शिल्प : रैदास और रज्जब की सामाजिक दृष्टि । 6. आज के संदर्भ में रैदास और रज्जब की वाणी का मूल्यांकन। 7. रैदास और रज्जब के प्रति आम लोगों की धारणाओं का अध्ययन । उपसंहार एवं संदर्भ ग्रंथ सूची ।

159. बधान (रीटा)

हिन्दी कहानी में कामकाजी महिलाओं की स्थिति का विश्लेषण ।

निर्देशिका : डॉ. कुमुद शर्मा

Th 15694

सारांश

प्रस्तुत शोध के माध्यम से कामकाजी महिलाओं को विभिन्न दृष्टिकोणों से देखने का प्रयास किया गया है । कामकाजी महिलाओं को विभिन्न कोणों से देखने, परखने एवं उनके व्यक्तित्व को समझने की कोशिश की गई है । हिन्दी कहानी में कामकाजी महिलाओं की स्थिति का विश्लेषण करते हुए उनका मूल्यांकन किया गया है ।

विषय सूची

1. महिला का कामकाजी होना एक जरूरत - समाजशासत्रीय परिप्रेक्ष्य में । 2. कहानी साहित्य में कामकाजी महिला का प्रक्षेपण-हिन्दी कहानी में कामकाजी महिला

1950 से 1970 तक । 3. हिन्दी कहानी में कामकाजी महिला - 1970 से 1990 तक । 4. समाज में कामकाजी महिला - कहानी में कामकाजी महिला दोनों के बीच के अन्तकाल का विश्लेषण । 5. कामकाजी महिला-एक मूल्यांकन। सन्दर्भ-ग्रन्थ-सूची।

160. यादव (पूनम)

समकालीन कहानियों में पीड़ा और विद्रोह का स्वर (1991 से 2004)

निर्देशिका : डॉ. विद्या सिन्हा

Th 15689

सारांश

शोध-प्रबंध में केवल स्त्रियों के विद्रोह के विविध आयामों पर विचार किया गया है तथा पीड़ा के संदर्भ को विवेचन से बाहर रखा गया है । 'स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी में विद्रोह चेतना' नाम से भी एक शोध प्रबंध है । इस शोध-प्रबंध में स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी में विद्रोह को देखा गया है । इस शोध प्रबंध में भी पीड़ा के स्तरों को विवेचित-विश्लेषित नहीं किया गया है । 'स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास में विद्रोह का स्वर' विषय पर भी एक काम हो रहा है । परंतु यह काम उपन्यासों को आधार बनाकर हो रहा है । इस कार्य (समकालीन कहानियों में पीड़ा और विद्रोह का स्वर) का विषय भिन्न और विस्तृत है । शोध प्रबंध में समकालीन कहानियों में पीड़ा और विद्रोह को साथ-साथ रखकर देखने का प्रयास है ।

विषय सूची

1. हिन्दी कहानी का समकालीन परिदृश्य । 2. पीड़ा के स्रोत । 3. पीड़ा का स्वर और विद्रोह की शक्तियाँ । 4. विद्रोह की प्रकृति । 5. पीड़ा और विद्रोह की द्वन्द्वात्मकता । उपसंहार एवं परिशिष्ट ।

161. राकेश कुमार

अष्टछाप काव्य में आराध्य का स्वरूप ।

निर्देशक : डॉ. अवनिजेश अवस्थी

Th 15692

99

सारांश

भारतीय संस्कृति एवं ऐतिहासिक परंपरा के परिप्रेक्ष्य में 'आराध्य' के स्वरूप एवं विकास को देखते हुए भी अष्टछाप काव्य में आराध्य के स्वरूप को इस शोध-प्रबंध में विवेचित करने का प्रयास किया है । वैदिक एवं संस्कृत साहित्य में आराध्य तथा आधुनिक साहित्य में वर्णित आराध्य के स्वरूप की तुलना में अष्टछाप काव्य में वर्णित आराध्य के स्वरूप का वैशिष्टय स्पष्ट किया गया है ।

विषय सूची

1. आराध्य की अवधारणा और उसका स्वरूप। 2. आराध्य की ऐतिहासिक परंपरा और विकास। 3. अष्टछाप : पृष्ठभुमि, स्थापना एवं महत्त्व। 4. अष्टछाप काव्य में आराध्य की अवधारणा, स्वरूप एवं भेद। 5. अष्टछाप काव्य में आराध्य कृष्ण। 6. अष्टछाप काव्य में आराध्य राधा का स्वरूप। 7. अष्टछाप काव्य में आराध्य राम का स्वरूप। 8. अष्टछाप काव्य में आराध्य विष्णु का स्वरूप। 9. अष्टछाप काव्य में आराध्य निर्गुण ब्रह्म का स्वरूप। 10. आराध्य परंपरा और अष्टछाप के आराध्यों का वैशिष्ट्य । उपसंहार एवं संदर्भ-ग्रंथ-सूची।

162. राघव (हेमलता)

मन्नू भंडारी के कथा-साहित्य में सामाजिक संघर्ष ।

निर्देशक : डॉ. मोहन

Th 15690

सारांश

शोध प्रबंध में मन्नू भंडारी के कथा-साहित्य में सामाजिक संघर्ष का वर्णन किया है। इनकी रचनाओं में स्त्री का संघर्ष मुखर रूप से वर्णित हुआ है क्योंकि पुरूषसत्तात्मक समाज में पुरूष स्त्री को केवल उतनी ही स्वतंत्रता देना चाहता है। जितनी उसके स्वयं के लिए लाभकारी हो । स्त्री की स्वतंत्रता जहाँ पुरूषवादी अहम् को ठेस पहुँचाती है वहाँ वह उसे अनेक रूढ़िवादी व नैतिकतावादी बंधनों की दुहाई देने लगता है । परंतु आज की शिक्षित नारी पुरूषवादी इस समाज में अपने

अस्तित्व की स्थापना के लिए लगातार संघर्षरत है । वह सभी नैतिकता-अनैतिकता, श्लीलता-अश्लीलता, रीति-रिवाज़ व परंपरागत मान्यताओं को मानने से इंकार करती है और अपने-आपको आधुनिक कहलाने वाले इस समाज की दोगलेपन की नीति के ख़िलाफ खुलकर विद्रोह करती है । उसके इसी विद्रोह को, समाज के प्रति उसके इसी संघर्ष को मन्नू भंडारी ने भिन्न सामाजिक धरातलों पर प्रस्तुत किया है ।

विषय सूची

1. सामाजिक संघर्ष की संकल्पना । 2. मन्नू भंडारी के उपन्यासों में अभिव्यक्त सामाजिक संघर्ष । 3. मन्नू भंडारी के उपन्यासों में अभिव्यक्त सामाजिक संघर्ष । 4. मन्नू भंडारी की कहानियों में अभिव्यक्त सामाजिक संघर्ष । 5. सामाजिक संघर्ष की अभिव्यक्ति के विभिन्न स्तर । 6. भाषा और शिल्प के गठन में सामाजिक संघर्ष की अभिव्यक्ति । उपसंहार एवं संदर्भ-ग्रंथ-सूची ।

163. राव (राजेश कुमार)
शिवानी के उपन्यासों में स्त्री की छवि ।
निर्देशक : डॉ. कुश सत्येन्द्र
Th 15818

सारांश

शिवानी के सम्पूर्ण लेखन के केन्द्र में नारी है । उन्होंने दुखी, पीडित महिलाओं पर बिना शोर-शराबे के लिखा । उनके आत्मकथात्मक लेखन और उपन्यास अपने समय और समाज का सच्चा प्रतिबिम्ब हैं । विशेषकर नारी भावनाओं की प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति के जरिए उन्होंने भारतीय स्त्री को एक नई अस्मिता दी । उन्होंने अपने उपन्यासों में स्त्री की विभिन्न-छवियाँ चित्रित की हैं । दरअसल हिंदी कथा-साहित्य में स्त्री मुद्दे को लेकर प्रमुखता से लेखन की शुरूआत ही शिवानी से होती है ।

विषय सूची

1. शिवानी : व्यक्तित्व, कृतित्व एवम् जीवन-दृष्टि । 2. भारतीय समाज में स्त्री

की छवि । 3. हिन्दी उपन्यासों में स्त्री की छवि । 4. शिवानी के उपन्यासों में स्त्री की छवि । 5. शिवानी के उपन्यासों में स्त्री-छवि के चित्रण में भाषा की भूमिका। 6. साहित्य के प्रति शिवानी का योगदान । उपसंहार एवं संदर्भ-ग्रंथ-सूची ।

164. लक्की (संजय कुमार)

विकास की अवधारणा और 1970 के बाद के हिंदी उपन्यास ।

निर्देशक : डॉ. प्रेम सिंह

Th15693

सारांश

शोध प्रबंध में यूरोप की विशष्ट परिस्थितियों के संदर्भ में विकास की आधुनिक अवधारणा का उदय और प्रकृति पर विचार किया गया है । पुराणों से प्रभावित प्राचीन नियतिवादी एवं परंपरागत भारतीय अवधारणा पर विचार किया गया है । विकास की पश्चिमी एवं गांधी की स्वदेशी मॉडल की टकराहट को दिखाते हुए अंत में विकास की उपयुक्त वैकल्पिक मॉडल की बात की गई है । रचनाकरों के मन में नेहरू की विकासवादी मॉडल के प्रति एक स्वप्निल दृष्टि रही है हालांकि कालातंर में इनका भी मोहभंग हो जाता है । इन सारी स्थितियों पर प्रकाश डाला गया है। उपन्यास के बदलते उद्देश्य ने 1970 के बाद की कथा रचना के विधान, चरित्र एवं भाषा में भी उल्लेखनीय परिवर्तन कर दिए । इस दौर की भाषा भी बेबाक, सटीक एवं अचूक प्रभाव डालने वाली है । इन सभी स्थितियों का विस्तृत वर्णन किया गया है ।

विषय सूची

1. विकास की अवधारणा : सैद्धांतिक पृष्ठभूमि। 2. भारत के संदर्भ में विकास के मॉडल । 3. उन्नीस सौ सत्तर के पूर्व के हिंदी उपन्यासों में विकास की स्थिति। 4. सत्तर के बाद विकास की अवधारणा पर केंद्रित उपन्यास । 5. सत्तर के बाद के उपन्यासों में आया सरंचनात्मक बदलाव । 6. अन्य भारतीय भाषाओं के उपन्यास में विकास की झलक । उपसंहार एवं परिशिष्ट ।

165. विकास कुमार

रीतिकालीन नीतिकाव्य में जीवन-मूल्य ।

निर्देशक : डॉ. पूरनचंद टण्डन

Th 15688

सारांश

शोध-प्रबंध रीतिकालीन नीतिकाव्य द्वारा जीवन के विभिन्न क्षेत्रों के विषय में अभिव्यक्त अवधारणाओं, दृष्टिकोणों, अनुभूतियों, संवेदनाओं अर्थत् 'जीवन-मूल्यों' को समझने, विश्लेषित करने और इन मूल्यों की प्रासंगिकता पर विचार करने का लघु प्रयास है ।

विषय सूची

1. जीवन-मूल्य : संकल्पना, स्वरूप और वैचारिक धरातल । 2. 'नीति' और 'नीतिकाव्य' : अवधारणा एवं स्वरूप । 3. नीतिकाव्य : परंपरावलोकन । 4. रीतिकालीन प्रमुख नीति-कवि, उनका जीवन-वृत्त एवं रचना-संसार । 5. रीतिकालीन नीतिकाव्य में व्यक्तिगत जीवन-मूल्य । 6. रीतिकालीन नीतिकाव्य में सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन-मूल्य । 7. रीतिकालीन नीतिकाव्य में आर्थिक जीवन-मूल्य । 8. रीतिकालीन नीतिकाव्य में धार्मिक, आध्यात्मिक एवं दार्शनिक जीवन-मूल्य । 9. रीतिकालीन नीतिकाव्य में राजनीतिक जीवन-मूल्य । उपसंहार एवं संदर्भ-ग्रंथ-सूची।

166. सिंह (अरूण कुमार)

बनारस केन्द्रित हिन्दी उपन्यास : सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ ।

निर्देशक : प्रो. गोपेश्वर सिंह

Th 15738

सारांश

शोध का केंद्रित हिन्दी उपन्यासों के विभिन्न संदर्भों को उजागर करना है । इसमें बनारस की विभिन्न परंपराओं, इतिहास आदि का अध्ययन किया गया है । इसके साथ ही विभिन्न नगरों जैसे दिल्ली, मुबंई, कोलकाता, इलाहाबाद, शिमला केंद्रित

उपन्यासों के माध्यम से यह देखने का प्रयास किया गया है कि परिवेश बदलने से उपन्यास की विषयवस्तु किस प्रकार बदल जाती है । बनारस के जीवन से जुड़े विभिन्न आयाम का अध्ययन किया गया है । उपन्यासों में खड़ी और भोजपुरी के अनुपात और संबंध, प्रारंभिक उपन्यासों में भाषा और शिल्प की कश्मकश, प्रेमचंद के उपन्यास और भाषा व शिल्प, स्वातंत्रोत्तर हिंदी उपन्यासों की भाषा और शिल्प में बदलाव जैसे विषयों का अध्ययन किया गया है ।

विषय सूची

1. बनारस और नगर केंद्रित उपन्यासों की परंपरा । 2. बनारस केंद्रित हिंदी प्रतिनिधि उपन्यास । 3. ऐतिहासिक, सामाजिक व सांस्कृतिक संदर्भों में बनारस और उपन्यासों की विषयवस्तु । 4. उपन्यासों में उभरती बनारस की तस्वीर और विशिष्ट स्वरूप । 5. उपन्यासों के शिल्पगत और भाषागत सरोकार । 6. उपसंहार।

167. सिंह (संजय कुमार)
'अनुवाद' पत्रिका : साहित्यिक एवं साहित्येतर संदर्भ ।
निर्देशक : डॉ. मुकेश अग्रवाल
Th 15737

सारांश

शोधकार्य के अंतगर्त पत्रिका का प्रकाशन-वर्ष, उद्देश्य, नीति-नियम, विषय-क्षेत्र, स्थायी-स्तंभ, साज-सज्जा आदि के साथ-साथ इसमें प्रकाशित विविध विज्ञापन एवं सूचना-संदेश आदि का वर्णन किया गया है । अनुवाद के अर्थ, परंपरा और आयाम पर चर्चा की गई है । पत्रिका में प्रकाशित देश-विदेश के विभिन्न भाषाओं में रचित ललित-साहित्य के अनुवाद का मूल्यांकन किया गया है । सूचनापरक सामग्री के अनुवाद में पारिभाषिक-शब्दावली की भूमिका पर विशेष-रूप से चर्चा की गई है । पत्रिका संपादन-कला तथा संपादक के गुणों का वर्णन किया गया है । अनुवाद पत्रिका के संपादकीय-लेखों की समीक्षा की गई है ।

विषय सूची

1. अनुवाद पत्रिका : समग्र परिचय । 2. अनुवाद : सिद्धान्त-पक्ष । 3. सृजनात्मक-साहित्य का अनुवाद तथा मूल्यांकन । 4. सूचनापरक-साहित्य का अनुवाद तथा मूल्यांकन । 5. अनुवाद पत्रिका का संपादन तथा संपादकीय लेखन। उपसंहार एवं संदर्भ-ग्रंथ-सूची ।

168. सुशील कुमार

स्वराज का वैचारिक विमर्श : प्रेमचंद और रेणु के विशेष संदर्भ में ।

निर्देशक : डॉ. प्रेम सिंह

Th 15 783

सारांश

शोध प्रबंध में हिन्दी साहित्य के दो महान रचनाकारों प्रेमचन्द और फणीश्वरनाथ रेणु को केन्द्र में रखकर स्वराज्य पर विचार किया गया है । प्रेमचन्द स्वतंत्रता पूर्व स्वराज्य के चिंतन को संपूर्णता में धारण करते हैं और फणीश्वरनाथ रेणु की रचनाओं में स्वाधीन भारत में स्वराज्य के विचार की उपस्थिति दिखायी देती है । इस प्रकार इन दो रचनाकारों के माध्यम से स्वराज्य के संपूर्ण चिंतन पर विचार किया गया है ।

विषय सूची

1. विषय प्रवेश । 2. स्वराज का वैचारिक विमर्श । 3. प्रेमचन्द और स्वराज विमर्श । 4. फणीश्वरनाथ रेणु और स्वराज विमर्श । उपसंहार । संदर्भ ग्रंथ सूचि।

169. शर्मा (आशुतोष)

भूषण और गोरेलाल के वीरकाव्य का तुलनात्मक अध्ययन ।

निर्देशक : डॉ. पूरनचंद टंडन

Th 15796

105

सारांश

शोध-प्रबंध में भूषण और गोरेलाल के वीरकाव्य की तुलना की गई है, जिसमें कहीं-कहीं समानता है तो कहीं-कहीं असमानता । साथ ही प्रस्तुत काव्यों की विशेषताओं को भी सामने लाया गया है । भूषण और गोरेलाल के वीरकाव्य का तुलनात्मक अध्ययन के विश्लेषण के दौरान ये स्थापनाएं की गई हैं कि दोनों ही कवियों ने पूरी ईमानदारी के साथ कवि कर्त्तव्य को निभाया है । दोनों ने अपनी परिस्थितियों और वातावरण के अनुकूल वर्ण्य-विषय को लेते हुए ऐतिहासिकता की पूरी सुरक्षा की है कहीं भी ऐतिहासिक घटनाओं अथवा तथ्यों को कल्पना रंग देकर प्रस्तुत नहीं किया गया है । वीर व्यक्तियों को अपने काव्य का नायक बनाकर लोक-चेतना का प्रयास आज भी प्रासंगिक बन पड़ता है ।

विषय सूची

1. तुलनात्मक-साहित्यः अवधारणा और अपेक्षाएं । 2. वीर रस और वीरकाव्यः स्वरूप, परंपरा और रीतिकालीन वीरकाव्य । 3. भूषण और गोरेलालः जीवन, व्यक्तित्व तथा रचना संसार भूषण और गोरेलाल का जीवन वृत्त । 4. भूषण का वीरकाव्य-स्वरूप एवं विशेषताएं । 5. गोरेलाल का वीरकाव्य-स्वरूप एवं विशेषताएं। 6. भूषण और गोरेलाल के वीरकाव्य का तुलनात्मक अध्ययन । उपसंहार । परिशिष्ट ।

170. हेमलता

आठवें दशक के हिन्दी उपन्यासों का समाजशास्त्रीय अध्ययन ।

निर्देशक : डॉ. नीलिमा रॉय चौधुरी

Th 15817

सारांश

शोध प्रबंधों में हिन्दी उपन्यास साहित्य के आठवें दशक का अध्ययन है । इस दशक में जयप्रकाश नारायण की सम्पूर्ण क्रान्ति तथा इन्दिरा सरकार की इमरजेंसी दो युगांतरकारी घटनाएं हैं जिसने समाज के सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्र में परिवर्तनकारी भूमिका निभाई। सम्पूर्ण आठवां दशक आंदोलनों, सामाजिक परिघटनाओं,

सांस्कृतिक संक्रमण और राजनीतिक अराजकता का काल रहा है। निश्चय ही आठवें दशक का हिंदी उपन्यास आक्रामक तेवर में सामाजिक जीवन की विसंगतियों, युवा पीढी के आक्रोश, सत्ता की तानाशही तथा दलितों व पिछडों की विवशता को उजागर करता है । दलित-स्त्री-आदिवासी-पिछडों जो करोड़ो की संख्या में मूक और असहायवासी में सदियों से रह रहे थे उनकी आवाज भी इस दशक के उपन्यासों में कुछ तलख, कुछ आक्रोश, कुछ घुटी हुई सुनाई पड़ती है, साथ ही नारी की द्वन्द्वात्मक स्थिति को भी सशक्त वाणी मिली है।

विषय सूची

1. समाजशास्त्रीय अध्याय का सैद्धान्तिक विश्लेषण । 2. हिन्दी उपन्यास - आठवां दशक । 3. आठवें दशक के हिन्दी उपन्यासों का सांस्कृतिक विश्लेषण । 4. आठवें दशक के हिन्दी उपन्यासों का सामाजिक विश्लेषण । 5. आठवे दशक के हिन्दी उपन्यासों का आर्थिक विश्लेषण । 6. आठवें दशक के हिन्दी उपन्यासों का राजनीतिक विश्लेषण । उपसंहार । परिशिष्ट ।

M.Phil Dissertations

171. अनुज कुमार तरूण
सात आसमान में उभरते नए सामाजिक संदर्भ ।
निर्देशक : प्रो. हरिमोहन शर्मा

172. अनुशब्द
रामविलास शर्मा की भाषायी एकता की अवधारणा ।
निर्देशक : डॉ. मोहन

173. अभिमन्यु कुमार
कमलेश्वर की इतिहास दृष्टि (संदर्भ : 'कितने पाकिस्तान') ।
निर्देशक : डॉ. पूरनचन्द टण्डन

174. अमित अनुराग
संशयात्मा में सामाजिक-सांस्कृतिक बोध ।
निर्देशक : प्रो. अजय तिवारी

175. अमीर हसन
भूषण के काव्य में सत्ता एवं राजनीति के प्रश्न ।
निर्देशक : डॉ. सुरेन्द्रनाथ सिंह

176. उपासना
जगदम्बा प्रसाद दीक्षित का 'मुरदा-घर' : भाषा का स्वरूप ।
निर्देशक : डॉ. मोहन

177. उपेन्द्र कुमार
नयी कहानी आन्दोलन और नामवर सिंह की आलोचना ।
निर्देशक : डॉ. प्रेम सिंह

178. गर्ग (मंजु)
'मधुकलश' का सामाजिक संदर्भ (हरिवंशराय बच्चन द्वारा रचित 'मधुकलश' के संदर्भ में) ।
निर्देशक : प्रो. कृष्णदत्त पालीवाल

179. गोयल (चारू)
'शतरंज के खिलाड़ी' : कहानी और फिल्म का तुलनात्मक अध्ययन ।
निर्देशिका : डॉ. कुमुद शर्मा

180. चित्रा
'क्याप' की कथा की संरचनावादी दृष्टि से अध्ययन ।
निर्देशक : प्रो. सुधीश पचौरी

181. चौधरी (लकी)
बसन्त त्रिपाठी की कविताओं में घर और बाज़ार ।
निर्देशक : प्रो. अजय तिवारी

182. जाँगिड़ (पुखराज)
'लोकप्रिय साहित्य' की अवधारणा और वेदप्रकाश शर्मा के उपन्यास (दहकते शहर, केशव पंडित, वर्दीवाला गुंडा-1, वर्दीवाला गुंडा-2, और कारीगर के विशेष संदर्भ में)
निर्देशक : डॉ. मोहन लाल कपूर

183. जैन (मनीष कुमार)
'मधुकलश' में लोकप्रियता और साहित्यिकता का द्वन्द्व ।
निर्देशिका : डॉ. कुमुद शर्मा

184. ठाकुर (भुवाल सिंह)
'दुनिया रोज़ बनती है' में सामाजिक संकट की पहचान ।
निर्देशक : प्रो. कृष्णदत्त पालीवाल

185. धर्मेन्द्र कुमार
सुरेन्द्र वर्मा के नाटकों में सामाजिक-सांस्कृतिक संक्रमण की समस्याएँ (सेतुबंध, सूर्य की अन्तिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक तथा आठवां सर्ग)।
निर्देशक : प्रो. रमेश गौतम

186. प्रदीप कुमार
'हमारा शहर उस बरस' में सांप्रदायिकता की समस्या ।
निर्देशक : डॉ. अपूर्वानंद

187. प्रेमवती
हिंदी आलोचना में तुलसीदास : आचार्य रामचंद्र शुक्ल और डॉ. रामविलास शर्मा का विशेष संदर्भ ।
निर्देशक : प्रो. गोपेश्वर सिंह

188. पपरेजा (श्वेता)
रीतिकाल के प्रमुख कवियों का नगर-वर्णन ।
निर्देशक : डॉ. मुकेश गर्ग

189. पाण्डेय (उपेन्द्र कुमार)
मीरां की कविता के विविध पाठों का विश्लेषण ।
निर्देशक : डॉ. पूरन चंद टंडन

190. पुनम
बिहारी-सतसई में नारी छवि ।
निर्देशक : प्रो. हरिमोहन शर्मा

191. भारद्वाज (कामिनी)
रेड एफ. एम. और रेडियो मिर्ची की सांस्कृतिक निर्मितियों का संरचनावादी अध्ययन।
निर्देशक : प्रो. सुधीश पचौरी

192. मणि (विजय नारायण)
आग का आईना और केदारनाथ अग्रवाल की राजनीतिक दृष्टि ।
निर्देशक : प्रो. कृष्ण दत्त पालीवाल

193. मनीषा
एस. एम. एस. जोक्स की भाषा का अध्ययन ।
निर्देशक : डॉ. सुधा सिंह

194. मिश्र (नीरज कुमार)
अज्ञेय के उपन्यासों में स्त्री-दृष्टि ।
निर्देशक : डॉ. अपूर्वानंद

195. मीणा (काना राम)
लोकप्रिय साहित्य का समाजशास्त्र और चन्द्रकान्ता ।
निर्देशक : डॉ. प्रेम सिंह

196. मीणा (प्रमोद)
नुक्कड़ नाटकों की भाषा (सफ़दर हाशमी के संदर्भ में) ।
निर्देशक : प्रो. रमेश गौतम

197. मीणा (राकेश कुमार)
सूरदास के भ्रमरगीत में नगर और ग्राम संस्कृति का द्वन्द्व ।
निर्देशक : डॉ. मुकेश गर्ग

198. मीणा (रामरूप)
तितली में सामाजिक-सांस्कृतिक यथार्थ का स्वरूप ।
निर्देशक : डॉ. तेज सिंह

199. यादव (विरेन्द्र कुमार)
दलित विमर्श और 'धरती धन न अपना' ।
निर्देशक : डॉ. तेज सिंह

200. राजीव कुमार
समकालीन हिन्दी कहानी में निहित ऐतिहासिक दृष्टि ।
निर्देशक : प्रो. अजय तिवारी

201. रॉय (धीरज कुमार)
समकालीन कविता में स्थानीयता का बोध (अरूण कमल, राजेश जोशी, ज्ञानेन्द्रपति के संदर्भ में) ।
निर्देशक : प्रो. गोपेश्वर सिंह

202. रावत (रश्मि)
विद्यासागर नौटियाल की कहानियों में गढ़वाल का जन-जीवन ।
निर्देशक : प्रो. हरिमोहन शर्मा

203. रितु
सत्ता और सर्जनशीलता का संघर्ष (आषाढ़ का एक दिन, आठवाँ सर्ग और हानूश के संदर्भ में)
निर्देशक : प्रो. रमेश गौतम

204. रेखा
घनांनद के काव्य में सुजान का स्वरूप ।
निर्देशक : प्रो. रमेश गौतम

205. वर्मा (अमिष)
हिन्दी भाषा की विकास में नागरी प्रचारिणी सभा का योगदान ।
निर्देशक : डॉ. अपूर्वानंद

206. वेंकटेश कुमार
आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र की आलोचना-दृष्टि (रीतिकाल के सन्दर्भ में) ।
निर्देशक : डॉ. मुकेश गर्ग

207. शर्मा (जया)
हिंदी डायास्पोरा लेखन में स्वदेश की खोज (विशेष संदर्भ - उषा प्रियंवदा और सुषम बेदी की कहानियाँ) ।
निर्देशक : डॉ. मोहन

208. शर्मा (दीपक)
''बेटियाँ'' सोप ऑपेरा में स्त्री प्रतिरोध के चिह्न ।
निर्देशिका : डॉ. सुधा सिंह

209. शर्मा (संजीव)
'चंद्रगुप्त' नाटक में स्वराज्य की संकल्पना ।
निर्देशक : प्रो. रमेश गौतम

210. सत्यानन्द सिंह निरूपम
हिन्दी साहित्य के इतिहास-लेखन की परम्परा और नलिनविलोचन शर्मा का इतिहास-दर्शन ।
निर्देशक : प्रो. गोपेश्वर सिंह

211. सूरी (शालू)
'हिन्दुस्तान' समाचार-पत्र की भाषा का शैलीवैज्ञानिक अध्ययन ।
निर्देशक : डॉ. मोहनलाल कपूर

212. सिंह (कुसुम)
नीरज के गीतों में आधुनिक भाव-बोध ।
निर्देशक : प्रो. कैलाश नारायण तिवारी

213. सिंह (नीलाम्बुज)
नज़ीर अकबराबादी के काव्य में आधुनिकता-बोध ।
निर्देशक : प्रो. हरिमोहन शर्मा

214. सिंह (वेद प्रकाश)
औपनिवेशिक प्रतिरोध का स्वरूप और 1857 पर आधारित उपन्यास 'ग़दर' ।
निर्देशक : डॉ. तेज सिंह

215. सीमा रानी
रीतिमुक्त कवियों के काव्य-प्रयोजन (आलम, घनानन्द, बोधा, ठाकुर) ।
निर्देशक : डॉ. मोहन

216. हिमकर (हिरण्य)
राष्ट्रीय आंदोलन का द्वन्द्व और रामवृक्ष बेनीपुरी के राजनीतिक विचार, विशेष संदर्भ : 'जनता' के संपादकीय ।
निर्देशक : डॉ. प्रेम सिंह